सिवान जिला का जनांकिकीय परिदृश्य

शैलेन्द्र मालाकार

सारांश : मानव एवं संसाधन का संतुलित अर्तसंबंध ही आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति का कारण है। किसी प्रदेश की जनांकिकी विशेषतायें उस प्रदेश के भौतिक वातावरण के तत्वों एवं संसाधन की सम्मिलित भूमिका का परिणाम होती हैं। जनसंख्या की संचयी वृद्धि 1911–2011 की अवधि में 339.17 प्रतिशत परिकलित हैं । लेकिन 2001–11 के दशक में पहली बार दशकीय प्रतिशत वृद्धि दर से ह्रास 24. 77 प्रतिशत (1991–2001) से 22.95 प्रतिशत (2001–11) का प्रतिवेदित हैं। जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों का इसे प्रतिफल माना जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में प्रति हजार पुरूषों पर 940 स्त्रियाँ परिकलित हैं। अध्ययन क्षेत्र में जिलास्तरीय प्रति वर्ग कि.मी. जनसंख्या का समग्र धनत्व 1501(2011) व्यक्तियों का हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में सिवान जिले की जनसंख्या के विविध पहलुओं का अध्ययन किया गया हैं इस शोध पत्र को तैयार करने में जनगणना विभाग, भारत सरकार के द्वारा प्रकाशित 2001 तथा 2011 के आँकड़ों की सहायता ली गयी है।

संकेत शब्द : जनांकिकी, जनसंख्या, परिदृश्य, वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, ग्रामीण, नगरीय।

प्रस्तावना : भूगोलवेताओं सहित सभी सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए जनसंख्या के विविध पहलुओं का अध्ययन मुख्य विषय रहा है। यद्यपि विभिन्न विषयों की अध्ययन विद्या और विषय क्षेत्र भिन्न–भिन्न हैं फिर भी प्रत्येक विषय का जनसंख्या के ऐतिहासिक और क्षेत्रीय प्रतिरूप विश्लेषण में महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। प्रारंभिक काल से ही जनसंख्यात्मक पहलुओं का अध्ययन मानव भूगोलवेताओं के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। पिछले कुछ दशकों से भूगोल को एक सामाजिक विज्ञान का स्थान भी दिया गया है। फलतः भौगोलिक अध्ययन में जनसंख्या और उससे सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन में वृद्धि हुई है इस प्रकार भौगोलिक अध्ययनों में भू–क्षेत्र के साथ–साथ पर मानव को प्रमुखता दी गयी है।

खुशहाल समाज के लिए टिकाऊ विकास होना आवश्यक है, विकास के लिए प्रत्येक नागरिक को क्षेत्रीय इतिहास तथा भूगोल की जानकारियों के साथ अन्य इलाकों के स्थानीय ज्ञान का आदान–प्रदान करना चाहिए। क्षेत्र की कमजोरियों तथा अच्छाइयों का समुचित ज्ञान होना चाहिए ताकि समाज हित की योजनाएँ व्यवहारिक एवं लाभकारी बन सकें। आज जरूरत हैं गाँव, मुहल्ला, पंचायत स्तर की योजनाएँ, जिनका सीधा लाभ आम आदमी को मिल सके।

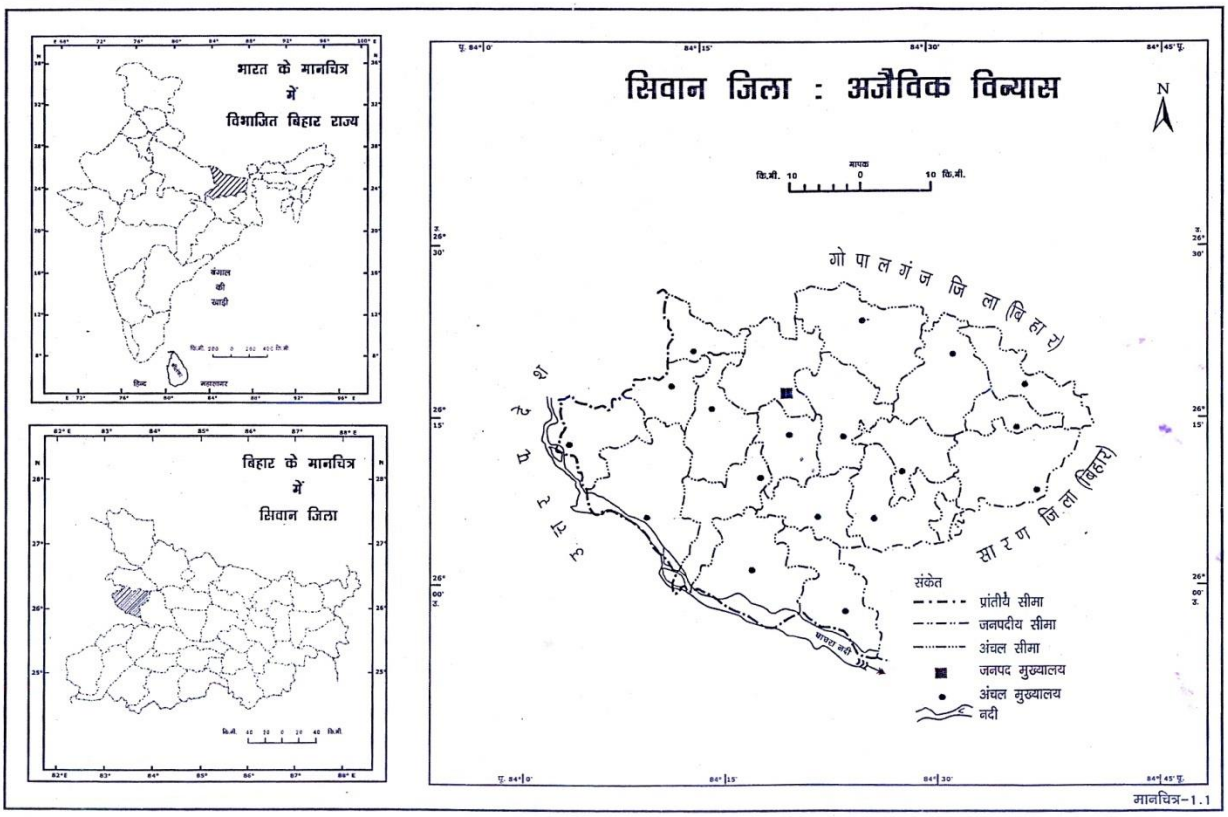

मानचित्र–1.1

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य सिवान जिला के जनसंख्या के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालना है। यह जानकारी आम आदमी को होनी चाहिए, जिससे वह अपने विकास के रास्तों के बारे में सोच सके तथा आवश्यकता पड़ने पर अपने अनुभवों को साझा कर सके। इसके अन्तर्गत सिवान में जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात, आयु–वर्ग एवं धार्मिक संरचना आदि का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकनात्मक, अनुभावात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधितंत्रों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का स्त्रोत : प्रस्तुत शोध प्रपत्र में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। वर्ष 1971 से 2011 तक की जनसंख्या को लेकर दशकीय वृद्धि का विश्लेषण किया गया है। इसके अलावें आंकड़ों एवं सूचनाओं के साथ–साथ सर्वेक्षण का सहारा लिया गया है।

अध्ययन क्षेत्रः– सिवान जिला $25^0$54′ उत्तरी आक्षांश से $26^0$23′ उत्तरी आक्षांश तथा $84^0$1′ पूर्वी देशान्तर से $84^0$47′ पूर्वी देशान्तर के बीच 2219 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। दक्षिण में घाघरा नदी से निर्मित प्राकृतिक सीमा के अतिरिक्त उत्तर–पूर्व एवं पश्चिम से यह एक भू–बंद जिला हैं, उत्तर एवं पूरब से इसकी सीमायें बिहार राज्य की क्रमशः गोपालगंज एवं सारण जिलों से मिलती है जबकि पश्चिम में

इसकी सीमा उत्तर प्रदेश के देवरिया जिला से चिह्न्त है, उल्लेखनीय है कि पश्चिमोत्तर बिहार में सीमावर्ती उत्तर प्रदेश से मिलती इसकी अवस्थिति इसके अर्थतंत्र और संस्कृति को संक्रमणाात्मक स्वरूप प्रदान करती है। जिला का संपूर्ण धरातल जलोढ़ीय मैदान का है। राज्य स्तर पर जलप्रवाह का घनत्व भी जिला की तुलना में अधिक है, बिहार के पूर्वी भाग में जहां नदियों का जाल सघन है सिवान जिला के केवल दक्षिणी सीमावर्ती भाग में घाघरा नदी प्रवाहित होती है जिला के पश्चिमी भाग से मात्र दाहा और झरही जैसे अंतर्स्तरीय प्रवाह वाली नदियां विद्यमान हैं।

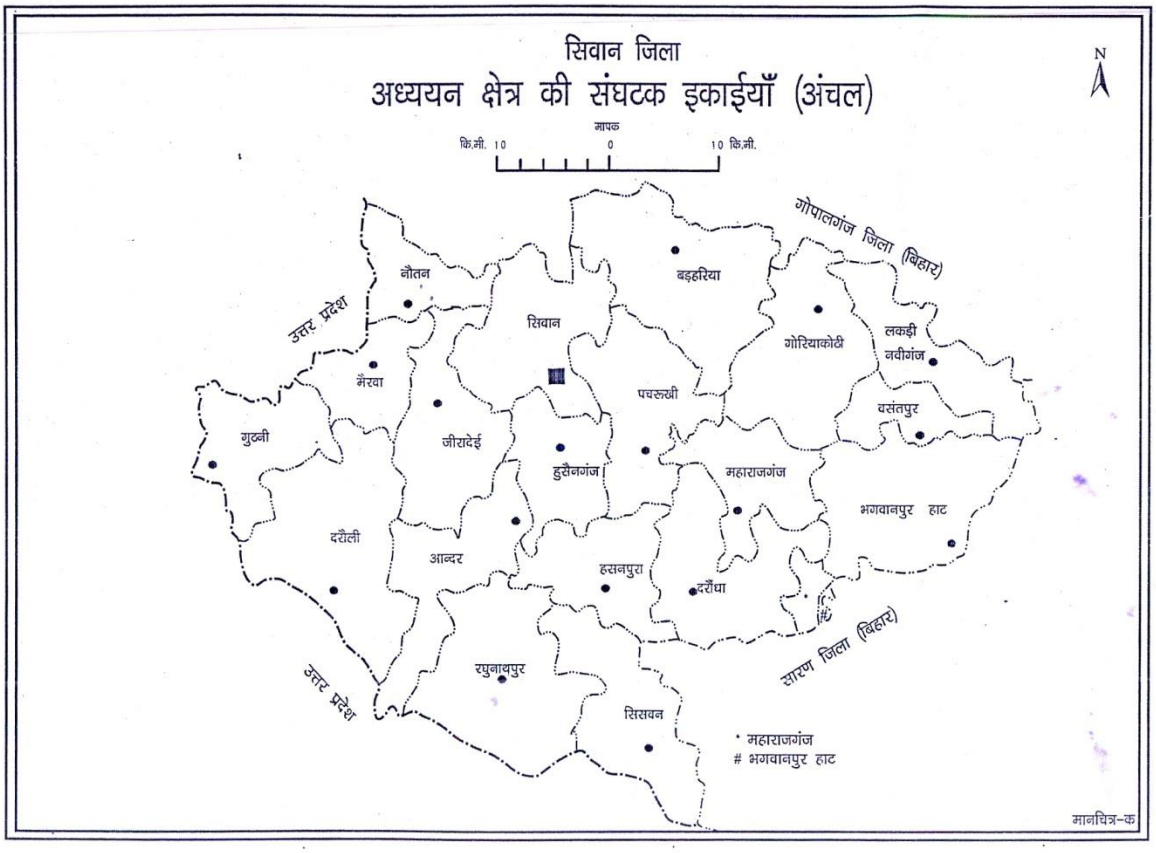

जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि : जनसंख्या एक अत्यधिक गत्यात्मक प्रघटन है। संचयी 1911–2011 की अवधि में 339.17 प्रतिशत परिकलित है। अर्थात् विगत 100 वर्षों में जनसंख्या आधार में तीन गुणी से अधिक की वृद्धि कर चुकी हैं लेकिन दशकीय वृद्धि इस अवधि में असमान है। 1911–21 का दशक महामारी, दुर्भिक्ष, बाढ़ एवं प्रथम विश्वयुद्ध के कारण बल्कि जनसंख्या के ह्रास (संख्यात्मक) का था, 1941–51 की 11.61 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि दर 1931–41 (17.30 प्रतिशत) की दर से न्यूनतर परिकलित किया गया, 1951–61 की अवधि में यह 12.54 प्रतिशत के लिये प्रगामी थी जो बाद के सभी दशकों में उत्तरोतर उच्चतर होती गयी जिसका संज्ञान जनसंख्या विस्फोट के रूप में भी लिया जाने लगा है यद्यपि कि 2001–11 के दशक में वृद्धि का प्रतिशत ह्रास भी प्रस्फुटित है। 1991–2001 में जहाँ यह

24.77 प्रतिशत परिगणित था, 2001–11 के दशक में यह 22.95 प्रतिशत परिगणित है। जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों का इसे प्रतिफल माना जा सकता है।

तालिका – 1.1

जनसंख्या की अंतर्दशकीय वृद्धि, 1911–2011

जनगणना वर्ष	जनसंख्या			दशकीय प्रतिशत वृद्धि		
	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
1911	758351	745899	12452	ग	–	–
1921	775536	763674	11862	2.27	2.38	–4.74
1931	821853	810638	11215	5.97	6.15	–5.45
1941	964073	945687	18386	17.30	16.66	63.90
1951	1075984	1053359	22625	11.61	11.39	23.06
1961	1210885	1172715	38170	12.54	11.33	68.71
1971	1462067	1410245	51822	20.74	20.25	35.77
1981	1778950	1699698	79252	21.67	20.53	52.93
1991	2170971	2055466	115505	22.04	20.93	45.74
2001	2708840	2561094	147746	24.78	24.60	27.91
2011	3330464	3147551	182913	22.95	22.90	23.80

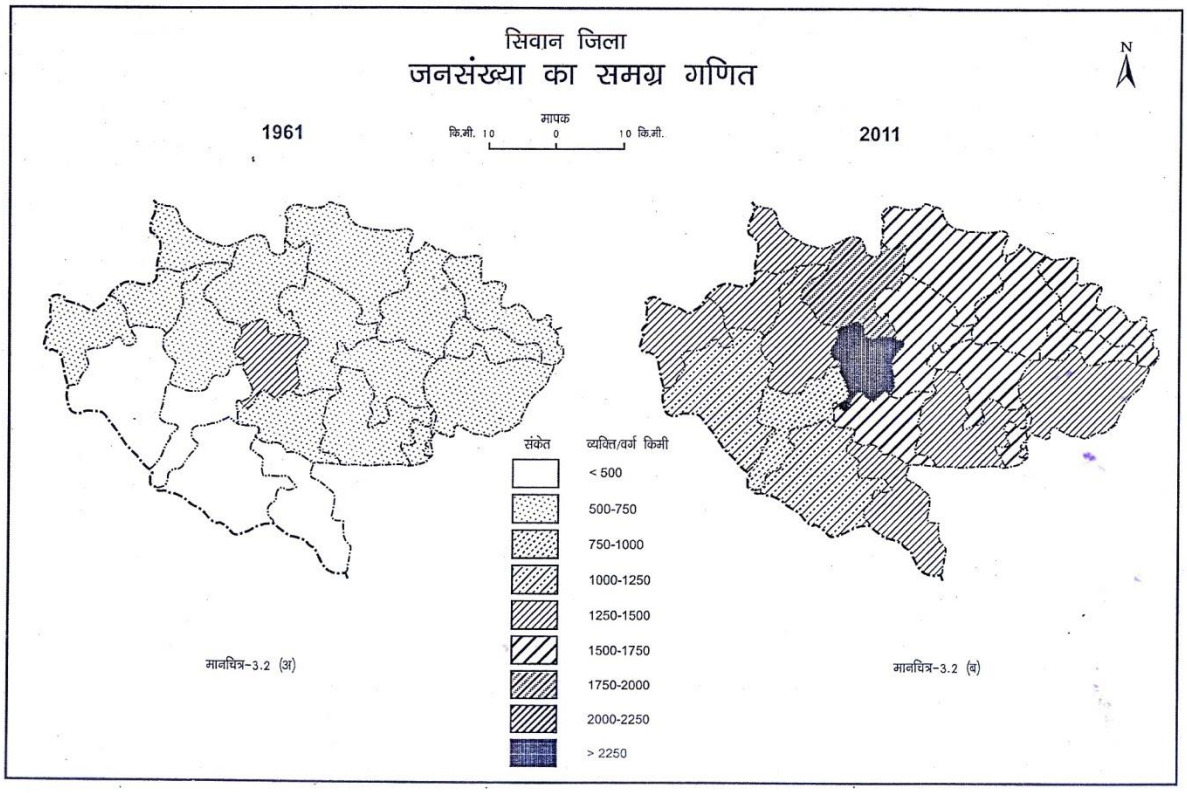

तालिका–1.1 के अंतिम खंड के विश्लेषण से स्पष्ट है कि नगरीय जनसंख्या की वृद्धि की प्रवृत्ति उतार–चढ़ाव से युक्त रही है, 1921 के पूर्व अति मंद से 1921 में नकारात्मक वृद्धि (–4.90 प्रतिशत) का सिवान जिला शिकार रहा है, लेकिन 1921–31 की दशक के साथ यह उत्तरोत्तर वृद्धिगत हैं, 1951–61 के दशक में उक्त दर तो 68.7 प्रतिशत का है, इस अवधि में ग्रामीण नगर उत्प्रवास ग्रामीण सेवा केन्द्रों का नगरीय रूप में उन्नयन तथा शहरों के समीपस्थ गाँवों पर शहरीकरण की अधिसूचना इसके प्रमुख कारण थे, ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि की दर भिन्न रही है। 1951 तक सामान्य अवस्था में 11.61 प्रतिशत थी। 1951–61 (12.54 प्रतिशत) से वृद्धि की दर समान रूप से उच्चतर बना रही है।

जनसंख्या का वितरण : क्षेत्र विशेष में जनसंख्या के वितरण का परिप्रेक्ष्य स्थान के संदर्भ में एक अवस्थितिगत संकल्पना है, सिवान जैसे नदीकृत मैदानी परिवेश में जनसंख्या के वितरण में अल्प स्थानिक भिन्नतायें हैं। मुख्यतः गुच्छित रूप में फैले शहरी जनसंख्या के द्वारा ही भिन्न प्रकार के वितरण का प्रदर्शन होता है अर्थात् ग्रामीण जनसंख्या जहाँ प्रकीर्णन से युक्त है, शहरी जनसंख्या गुच्छित है।

तालिका – 1.2

जनसंख्या वितरण का अवस्थिति सह–गुणांक, 1961 एवं 2011

क्र.स.	अंचल	अवस्थिति सह–गुणांक		प्रवृति
		1961	2011	
1.	सिवान	1.52	1.90	+
2.	बड़हरिया	1.18	1.31	+
3.	गोरियाकोठी	1.23	1.17	–
4.	भगवानपुर हाट	1.09	1.06	–
5.	महाराजगंज	1.31	1.19	–
6.	पचरूखी	1.16	1.17	–
7.	गुठनी	1.06	1.01	–
8.	दरौली	0.82	0.073	–
9.	रघुनाथपुर	0.90	0.73	–
10.	दरौधा	1.08	1.00	–
11.	सिसवन	0.66	0.96	+

जनसंख्या वितरण के प्रारूपों को प्रस्फुटित करने में अवस्थिति सह–गुणांक (Location Co-efficient) विधि का उपयोग श्रेयस्कर माना जाता है।

इस विधि का निहितार्थ यह है कि एक से अधिक का उपस्थिति सह–गुणांक संघटक विशेष के अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र में बड़े आकार की जनसंख्या की ओर संकेत करता है। दूसरी ओर एक से न्यूनतर का अवस्थिति सह–गुणांक ठीक इसके विपरीत का सूचक है, तदनुसार सिवान जिले में सिवान अंचल (1. 90), बड़हरिया (1.31), गोरियाकोठी (1.17), बसंतपुर (1.22), भगवानपुर हाट (1.06), महाराजगंज (1.19), पंचरूखी (1.17) हुसैनगंज (1.55), मैरवा (1.02), गुठनी (1.01) तथा हसनपुरा (1.11) जनसंख्या के सघन संकेन्द्रण के अंचल हैं। द्रष्टव्य है कि सिवान जनपद के अवस्थिति सह–गुणांक का मूल सर्वोच्च क्रमशः हुसैनगंज (1.55) और बड़हरिया (1.31) अंचलों का हैं। इनमें प्रथम जहाँ शहरी जनसंख्या से युक्त हैं, दूसरा एवं तीसरा ग्रामीण जनसंख्या के अंचल हैं, जिनमें अल्पसंख्यकों का संख्यात्मक बल उसके प्रतिपक्ष के समतुल्य हैं। उच्चतर अवस्थिति सह–गुणांक वाले अन्य अंचल नौतन (1.01), बसंतपुर (1.22), महाराजगंज (1.19), भगवानपुर (1.06), गुठनी (1.01) इत्यादि है। लेकिन इनमें संकन्द्रन सामजस्य श्रेणी का है। दुर्बल संकेन्द्रण के अंचल लकडी नवीगंज (0.98), जीरादेई (0.93), दरौली (0.73), आंदर (0.67), रघुनाथपुर (0.73) और सिसवन (0.96) है। उल्लेखनीय है कि दुर्बल संकेन्द्रण वाले सिसवन, रघुनाथपुर, आंदर, दरौली जैसे अंचल घाघरा नदी के सहारे फैले हुये है। नदी द्वारा लायी गयी बाढ़ उन सभी अंचलों

के ग्रामीण कृषि अर्थतंत्र को प्रभावित करता है। साथ ही साथ रोजगार के अवसरों की खोज में यहाँ वैश्य कमाऊ पुरूषों का प्रवास भी अपेक्षाकृत अधिक है।

जनसंख्या का समगत घनत्व – सिवान जिला में जलास्तरीय प्रति वर्ग कि.मी. जनसंख्या का समग्र घनत्व 1501 (2011) व्यक्तियों का है। क्षेत्रीय औसत की तुलना में उच्चतर घनत्व के अंचल हसनपुरा (1542), हुसैनगंज (2153), पंचरूखी (1622), महाराजगंज (1648), गोरियाकोठी (1621), बसंतपुर (1692), बड़हरिया (1812) एवं सिवान (2641) है। इनमें सिवान और महाराजगंज को छोड शेष सभी ग्रामीण जनसंख्या से सीमित है। सघन जनसंख्या वाले ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रीमण अंचल बड़हरिया, बसंतपुर, पंचरूखी, हुसैनगंज और हसनपुरा प्रमुख है। ये सभी अंचल ग्रामीण सेवाकेन्द्र से भी युक्त है। दूसरी ओर जनपदीय औसत से न्यूनतर घनत्व वाले अंचलों में नौतन (1402), लकड़ी नवीगंज (1354), भगवानपुर हाट (1477), जीरादेई (1289), गुठनी (1396), दरौली (1009), आन्दर (930), रघुनाथपुर (1011), दरौंधा (1393) और सिसवन (1329) हैं।

तीव्रतर गति से वृद्धिगत जनसंख्या का घनत्व भी उच्चतर परिणाम में आलेखित है। वृद्धि सर्वत्र है। वृद्धि का परिमाण प्रायः डेढ़ गुणी (20 वर्षों अर्थात् 1991–2011) में प्रस्फुटित है। लेकिन स्थानिक भिन्नताओं के रूप में जिला के मध्यवर्ती शहरी जनसंख्या से प्रभावित अंचलों तथा पूर्वी भाग में विकसित कृषीय अर्थतंत्र वाले अंचलों में जहाँ डेढ़ गुणी तक हैं, घाघरा के सहारे फैली आन्दर एवं रघुनाथपुर अंचलों में घनत्व में वृद्धि अल्प परिणाम की हैं।

लिंगानुपात : प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या से लिंगानुपात से गणना की जाती है। इसे यौन–संरचना भी कहा जाता है। यौन अनुपात भारत की जनसंख्या के प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में निम्नांकित है :

यौन अनुपात = पी.एफ. / पी.ओ

जहाँ पी.एफ. औरतों की संख्या है और पी.ओ. पुरूषों की संख्या है।

तालिका – 1.3

यौन–अनुपात – 2011

क्र. स.	अंचल	यौनानुपात
1.	नौतन	978
2.	सिवान	940
3.	बड़हरिया	957
4.	गोरियाकोठी	1012

5.	लकड़ी नवीगंज	1024
6.	बसंतपुर	958
7.	भगवानपुर	978
8.	महाराजगंज	1019
9.	पचरूखी	984
10.	हुसैनगंज	965
11.	जीरादेई	1010
12.	मैरवा	959
13.	गुठनी	994
14.	दरौली	990
15.	आन्दर	1020
16.	रघुनाथपुर	1022
17.	हसनपुरा	1047
18.	दरौंधा	1021
19.	सिसवन	982
	जिला	988

यौन अनुपात जीवन की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं के अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं। गर्भधारण के समय दोनों लिगों के बीच का अनुपात प्राथमिक, जन्म के समय का अनुपात द्वितीयक और जनगणना काल का अनुपात तृतीयक यौन अनुपात कहलाता है। इनमें से प्रथम दो के आंकड़ें न जनपद जनगणना पुस्तिकाओं में मिलते हैं और न द्वितीयक जनसंख्या पुस्तिका तालिकाओं में, यहाँ वर्त्तमान अध्ययन में मात्र तृतीयक प्रकार के यौन–अनुपात का विश्लेषण ही संभव हैं जो जनगणना के समय उपलब्ध होता हैं तथा जिसका उल्लेख जनगणना पुस्तिकाओं में उपलब्ध हैं।

सिवान जनपद में प्रति 1000 पुरूषों पर 988 स्त्रियों का अनुपात 2011 की जनगणना के अनुसार. परिकलित है। जनपदीय अनुपात की तुलना में गोरियाकोठी (1012), लकड़ी नवीगंज (1024), महाराजगंज (1019), जीरादेई (1010), आंदर (1020), रघुनाथपुर (1022), हसनपुरा (1047) और दरौंधा (1021) ऐसे अंचल है जहाँ स्त्रियों की संख्या पुरूषों की तुलना में उच्चतर है।

द्रष्टव्य है कि स्त्रियों की आधिक्य वाले अंचल बहुतायत संख्या में जनपद के दक्षिणी भाग में अपेक्षाकृत कम विकसित हैं। यहाँ से पुरूषों का स्थानान्तरण प्रायः बड़ी संख्या में जीविकोपार्जन गतिविधियों के लिए हुआ करता है। फलस्वरूप स्त्रियों का आधिक्य उसकी परिणति है। जनपद के स्त्रियों के अभावग्रस्त यौनानुपात वाले अंचल – सिवान (940), नौतन (978), भगवानपुर हाट (978), बड़हरिया (957), बसंतपुर (958), पचरूखी (984), हुसैनगंज (965) और सिसवन (982) हैं। इनमें विशेषकर

शहरी जनसंख्या वाले अंचलों में स्त्रियों का अभाव का अपेक्षाकृत उच्चतर क्रम सिवान अंचल में प्रति हजार पुरूषों में 940 स्त्रियाँ परिकलित की गयी हैं।

आयु वर्ग : जनसंख्या सर्वत्र अपनी भौतिक संरचना में भिन्न–भिन्न आयु, लिंग, शिक्षा, साक्षरता, वृति, जाति एवं धर्म के लोगों से निर्मित होती है। यह तब एक कायिक प्रक्रिया है जब तक कि यह कृत्रिम से बाधित न हो।

आयु संरचना प्रजननता, मर्त्यता एवं गतिशीलता जैसे तीन अनिवार्य नियामकों से निर्धारित होती है। इनमें से किसी एक में होने वाले परिवर्तन शेष दो को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। अप्रत्यक्ष रूप में सामाजिक एवं आर्थिक दशाये भी इनके माध्यम से आयु–संरचना को नियंत्रित करती है।

तालिका – 1.4

समग्र आयु–संरचना एवं आयु संरचना का यौन अंतरीय, 2011

आयु वर्ष में	कुल जनसंख्या	प्रतिशत	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
0–14	1284235	38.56	658949	39.34	625286	37.77
15–29	831213	24.96	422225	25.21	408988	24.71
30–59	913649	27.43	437498	26.12	476151	28.76
60–80+	298247	8.95	154643	9.23	143604	8.67
Age not stated	3120	0.09	1775	0.10	1345	0.08
कुल	3330464	100.00	1675090	100.00	1655374	100.00

आयु संरचना में शिशु एवं किशोर आयु–वर्ग (0–14) की जनसंख्या की प्रारंभ से आती प्रधानता आज भी विद्यमान है। समग्र रूप से सिवान जनपद की कुल जनसंख्या का 38.56 प्रतिशत भाग इस आयु वर्ग में शामिल है। 15–29 एवं 30–59 वर्ष आयु–वर्ग में कुल जनसंख्या की क्रमशः 24.96 प्रतिशत एवं 27.43 प्रतिशत सम्मिलित है। स्मरणीय है कि ये दोनों आयु–वर्ग क्रमशः युवा एवं प्रौढ़ आयु के हैं और आर्थिक दृष्टिकोण से इनका योगदान महत्वपूर्ण है। ये दोनों मिलकर कुल जनसंख्या का 52.39 परिकलित है। शेष जनसंख्या वृद्धा वर्ग की है जिसमें 60 से 80 वर्ष आयु वाले लोग शामिल है।

धार्मिक संरचना : मात्रा एवं गुणवता की दृष्टि से जनसंख्या की वृद्धि एवं वितरण को प्रभावित करने में धार्मिक संरचना का प्रभाव महत्वपूण्र है विशेषकर सिवान जनपद जैसे बहुधर्मीय क्षेत्र में धार्मिक अवधारणाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण बन जाती है।

तालिका – 1.5

जनसंख्या की धार्मिक संरचना, 2011

धार्मिक वर्ग	सिवान जनपद (प्रतिशत में जनसंख्या)	बिहार रारज्य (प्रतिशत में जनसंख्या)
हिन्दू	18.74	83.20
मुस्लिम	18.21	16.50
इसाई	0.01	0.10
सिख	0.005	0.01
जैन	0.003	0.01
बौद्ध	0.006	0.02
अन्य	0.03	0.01
कुल	100.00	100.00

यहाँ की जनसंख्या मुख्यतः हिन्दू (81.74 प्रतिशत) एवं मुस्लिम (18.20 प्रतिशत) दो धर्मावलम्बियों से मिश्रित है। संयुक्त रूप से यह दोनों धर्मावलम्बी यहाँ की कुल जनसंख्या में 99.55 प्रतिशत की भागीदारी रखते हैं। शेष 0.05 प्रतिशत में इसाई, सिख, जैन, बौद्ध एवं अन्य सीमित है। राज्य स्तर पर हिन्दू जहाँ 81.20 प्रतिशत है वही सिवान जनपद में हिन्दू 81.74 प्रतिशत है। दूसरी ओर मुस्लिम जनसंख्या जहाँ बिहार राज्य में 16.50 प्रतिशत है। सिवान जनपद में उनका प्रतिशतबल 18.21 प्रतिशत का है। अर्थात् बिहार राज्य की तुलना में मुसलमानों का प्रतिशत बल सिवान जिला में उच्चतर है अन्य धर्मावलम्बियों की दृष्टि से राज्य और जिला एक–दूसरे के समकक्ष है।

साक्षरता – साक्षरता समाज या राष्ट्र की सांस्कृतिक प्रगति का मानक है। जनसंख्या का यह एक गुणात्मक नियामक भी है। जनपदीय औसत से उच्चतर साक्षरता दर के अंचल सिवान (74.48 प्रतिशत), भगवानपुर हाट (70.35 प्रतिशत), पचरूखी (69.51 प्रतिशत), जीरादेई (71.46 प्रतिशत), गुठनी (70.96 प्रतिशत) और सिसवन (68.47) है। जनपदीय औसत से न्यूनतर साक्षरता दर वाले अंचलों की कुल संख्या बड़ी है लेकिन इनमें एक बड़े अंतर से पिछड़ने वाले अंचल लकड़ी नवीगंज (64.46 प्रतिशत) है। इसकी अवस्थिति जनपद में शहरों से दूरस्थ ग्रामीण परिवेश की है। इसके अतिरिक्त अंचल सिसवन (68.47 प्रतिशत), दरौंधा (68.22 प्रतिशत), हसनपुरा (68.35 प्रतिशत), आंदर (69.15 प्रतिशत), दरौली (69.08 प्रतिशत) एवं नौतन (68.72 प्रतिशत) जनपद औसत की तुलना में एक साधारण अंतर से पीछे है।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः अब इस तथ्य पर आम सहमति है कि तीव्र जनसंख्या विकास में कमी का मूल कारण नहीं है परंतु विकासशील देशों की जटिल समस्याओं के निराकरण में इसे नजरअंदाज भी नहीं किया जा

सकता है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि विकास दर में कमी लाने में सहयोगी है, खलनायक नहीं लेकिन विकास के लिए शहरों की अपेक्षा पिछड़े, अविकसित और ग्रीमण क्षेत्रों की तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा जैसे–जैसे शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ़ेगा लोगों में जागरूकता, समृद्धि एवं विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। परिवार अपने आप छोटा होता चला जाएगा।

संदर्भ

मात्थस, टी 1798 : एन. एस्से ऑन दी प्रिंसिपुल ऑफ पोपुलेशन, लंदन

बोसरप, ई0 1965 : दी कन्डीशन्स ऑफ एग्रीकल्चरल ग्रोथ, एलेन एंड एनबीन, लंदन

भट्ट, एल.एस. एंड ए.टी.ए. लियरमौथ, 1968 : रीसेन्ट कन्ट्रीब्यूशन्स टू दी इकोनोमिक